ज्ञानपीठ पुरस्कार 2023

स्रोत:द हिंदू

ज्ञानपीठ चयन समिति ने घोषणा की कि वर्ष 2023 के लिये 58वाँ **ज्ञानपीठ पुरस्कार** दो लेखकों, संस्कृत **विद्वान जगद्गुरु रामभद्राचार्य** तथा **उर्दू कवि और गीतकार गुलज़ार** को दिया जाएगा।

- यह पुरस्कार **दूसरी बार संस्कृत** के लिये तथा **पाँचवीं बार उर्दू** के लिये दिया जा रहा है।

ज्ञानपीठ पुरस्कार क्या है?

- **परिचय:**
  - ज्ञानपीठ पुरस्कार भारत का सबसे पुराना और **सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार** है। यह किसी लेखक को उनके **"साहित्य के प्रति उत्कृष्ट योगदान" के लिये प्रतिवर्ष** दिया जाता है। यह पुरस्कार वर्ष **1961 में स्थापित एवं पहली बार वर्ष 1965** में प्रदान किया गया था।
  - यह पुरस्कार **अंग्रेज़ी तथा अन्य भारतीय भाषाओं** के लिये प्रदान किया जाता करता है। हालाँकि अर्हता भारतीय नागरिकों तक ही सीमित है। यह **मरणोपरांत नहीं** दिया जाता है।
  - यह भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा भारतीय साहित्य में उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देने के लिये दिया जाता है।
    - **साहू शांतिप्रसाद जैन एवं उनकी पत्नी रमा जैन द्वारा** वर्ष 1944 में स्थापित भारतीय ज्ञानपीठ एक प्रतिष्ठित साहित्यिक एवं अनुसंधान संगठन है जिसका **मुख्यालय नई दिल्ली, भारत** में है।
    - यह साहित्य एवं संस्कृति के लिये प्रसिद्ध है, यह **कई दशकों से पुरस्कार, प्रकाशन, फेलोशिप तथा अनुसंधान जैसे साहित्यिक प्रयासों को सक्रिय रूप से बढ़ावा** दे रहा है।
- **नकद पुरस्कार एवं सम्मान:**
  - पुरस्कार विजेताओं को उनकी साहित्यिक उपलब्धियों का सम्मान करते हुए 11 लाख रुपए का नकद पुरस्कार, वाग्देवी की एक मूर्ति और एक प्रशस्ति-पत्र दिया जाता है।

[//](#)

गुलज़ार तथा जगद्गुरु रामभद्राचार्य का योगदान क्या है?

- **गुलज़ार:**
  - गुलज़ार (संपूर्ण सिंह कालरा) का जन्म 18 अगस्त 1934 को अविभाजित भारत के झेलम ज़िले के दीना गाँव में हुआ था।
    - वह न केवल सिनेमा में बल्कि साहित्यिक क्षेत्र में भी सबसे सम्मानित नामों में से एक हैं। उन्हें अपने दौर के सबसे बेहतरीन उर्दू शायरों में से एक माना जाता है।
  - गुलज़ार को उनके कार्य हेतु उर्दू के लिये **[साहित्य अकादमी पुरस्कार (2002)](#)**, [दादा साहब फाल्के पुरस्कार (2013)](#), [पद्म भूषण (2004)](#) **तथा** [राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार](#) **प्राप्त हुए।**
  - कविता में उन्होंने एक **नई शैली 'त्रिवेणी' का आविष्कार किया जो तीन पंक्तियों की एक गैर-मुकफा कविता है।**
  - उनके कुछ बेहतरीन कार्यों में फिल्म **"स्लमडॉग मिलियनेयर"** का गीत "जय हो" शामिल है, जिसे वर्ष **2009 में** [ऑस्कर पुरस्कार](#) एवं व**र्ष 2010 में** [ग्रैमी पुरस्कार](#) मिला।

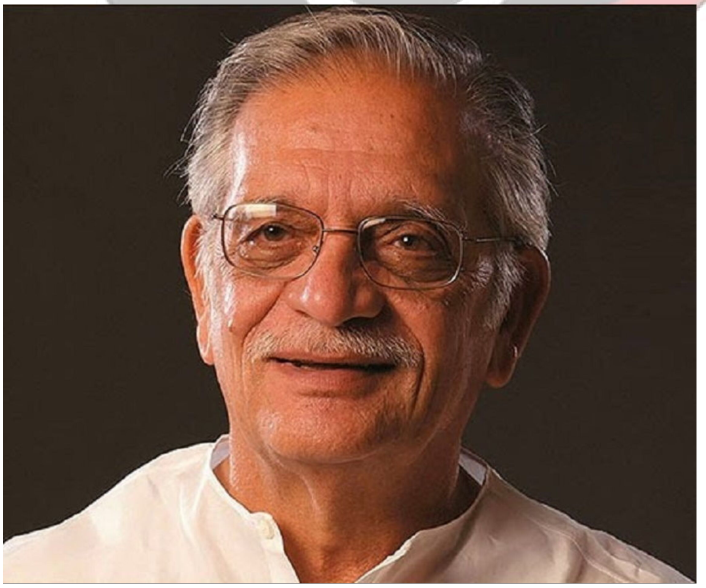

The Vision

- **जगद्गुरु रामभद्राचार्य:**
  - जगद्गुरु रामानंदाचार्य, एक **बहुभाषाविद्**, हिंदू आध्यात्मिक गुरु, शिक्षक, कवि तथा लेखक हैं। उनका जन्म **वर्ष 1950 में उत्तर प्रदेश के जौनपुर** में हुआ था और वह **22 भाषाएँ बोलते** हैं।
    - रामभद्राचार्य संस्कृत, हिंदी, अवधी तथा मैथिली सहित कई भारतीय भाषाओं के कवि एवं लेखक हैं। उन्होंने विभिन्न भारतीय भाषाओं में 240 से अधिक पुस्तकें और ग्रंथ लिखे हैं तथा **वर्ष 2015** में उन्हें **पद्म विभूषण** प्राप्त हुआ था।
    - **अरुंधति, अष्टावक्र, अवध की अजोरिया तथा दशावतार** रामभद्राचार्य द्वारा रचित कुछ साहित्यिक कृतियाँ हैं।
  - वह मध्य प्रदेश के **चित्रकूट में तुलसी पीठ के संस्थापक और प्रमुख** हैं।
    - तुलसी पीठ हिंदू धार्मिक साहित्य के अग्रणी प्रकाशकों में से एक है।
  - **रामभद्राचार्य रामानंद संप्रदाय (सम्प्रदाय) के चार जगद्गुरु रामानंदाचार्यों में से एक** हैं और वर्ष 1982 से इस पद पर हैं।
    - **रामानंदी संप्रदाय** आज भारत में गंगा के मैदान के आसपास तथा नेपाल में सबसे बड़े एवं सर्वाधिक समतावादी हिंदू संप्रदायों में से एक है। यह मुख्य रूप से राम की पूजा के साथ-साथ सीधे **विष्णु एवं उनकेअन्य अवतारों पर ज़ोर** देता है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/jnanpith-award-2023